पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 10 , वर्ष 24

# ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

448

-: सम्पादक :-
बजरंग लाल अग्रवाल
रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01.6.2024
प्रकाशन की तारीख 15.5.2024
पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

**बेरोजगारी की क्या हो परिभाषा :** गतांक GT-447 से आगे

ज्ञान तत्व के पूर्व अंक 447 के आगे- हम बेरोजगारी पर चर्चा कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास तीन प्रकार की योग्यताएं हो सकती हैं - एक है श्रम, दूसरा बुद्धि और तीसरा धन। वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति के पास आंशिक रूप से तीनों ही क्षमताएं होती हैं लेकिन यदि हम विशेष योग्यता का आकलन करें तो श्रमिक के पास मुख्य स्रोत श्रम होता है शारीरिक श्रम। बुद्धिजीवी के पास श्रम तो होता ही है, साथ में बौद्धिक क्षमता भी होती है। धन वाले के पास श्रम भी होता है, बुद्धि भी होता है, धन भी होता है। इस तरह यदि किसी व्यक्ति के अक्षम या निराश्रित होने की संभावना अधिक होती है तो वह होता है श्रमिक क्योंकि उसके पास केवल एक योग्यता है। शिक्षित या बुद्धिजीवी के पास दो योग्यताएं होती हैं, इसलिए यह बात पूरी तरह झूठ है कि कोई शिक्षित व्यक्ति भी बेरोजगार हो सकता है या भूखा हो सकता है। क्योंकि शिक्षित व्यक्ति के पास कम से कम दो योग्यताएं उपलब्ध होती हैं शारीरिक श्रम और बुद्धि। अगर उसे बौद्धिक रोजगार नहीं मिल पाता है, तब भी वह बेरोजगार नहीं रहेगा क्योंकि श्रम तो उसके पास है ही। जो भी लोग कहते हैं कि शिक्षित व्यक्ति भी बेरोजगार होता है वे लोग वास्तव में श्रम शोषक है, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति बेरोजगार हो ही नहीं सकता। वर्तमान भारत में जो शिक्षित बेरोजगार दिख रहे हैं, उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है, जो न्यूनतम श्रम मूल्य पर योग्यता अनुसार काम करने के लिए तैयार हो। वास्तव में वह अच्छे रोजगार की प्रतीक्षा में है, बेरोजगार नहीं। यदि हमने बेरोजगारी की परिभाषा सुधार दी तो भारत में बेरोजगारों का आंकड़ा अपने आप बहुत कम हो जाएगा। क्योंकि जो व्यक्ति श्रम करने के लिए तैयार नहीं होगा वह बेरोजगारों की सूची से बाहर निकल जाएगा। दुनिया भर की घिसी-पिटी सत्य परिभाषाएं ही भारत में बेरोजगारी की गलत परिभाषा प्रचलित करने का मुख्य कारण है। हमें बेरोजगारी की सही परिभाषा के आधार पर आकलन करना चाहिए।

यह बात तय है कि शिक्षित कभी बेरोजगार हो ही नहीं सकता। जब भी बेरोजगार होगा तो वही हो सकता है, जिसके पास आय का सिर्फ एक साधन श्रम हो। तीसरी बात विचारणीय है कि वर्तमान भारत में श्रमजीवी अधिक बेरोजगार हैं या बुद्धिजीवी। इस विषय पर रिसर्च किया गया तो यह बात सामने आई कि कोई भी बुद्धिजीवी किसी भी परिस्थिति में बेरोजगार नहीं हो सकता। बेरोजगारी की गलत परिभाषा उन्हें बेरोजगार बनाती है। स्वतंत्रता के तत्काल बाद श्रमजीवी बहुत बड़ी मात्रा में बेरोजगार थे और बुद्धिजीवियों की कमी थी, शिक्षा

का अभाव था, हम शिक्षा के मामले में बहुत पीछे थे। इसलिए शिक्षित लोगों का वेतन बहुत बढ़ाया गया, साथ में शिक्षा को महत्वपूर्ण भी बनाया गया। जिससे श्रमिक लोग शिक्षा की तरफ आकर्षित हों। लेकिन वर्तमान भारत में शिक्षित लोगों की संख्या बहुत अधिक हो गई है, नौकरी-पेशा सरकारी कर्मचारियों का वेतन भी बहुत बढ़ गया है और श्रम तथा शिक्षा के बीच आर्थिक फर्क भी बहुत हो गया है। जहां एक श्रमजीवी को 250 से ₹300 प्रतिदिन मिल रहा है वही एक सामान्य बुद्धिजीवी को 1000 से भी अधिक प्रतिदिन मिल रहा है। बुद्धिजीवियों को सुविधा और सम्मान भी अधिक मिल रहा है, इसलिए अधिक से अधिक लोग शिक्षित होना चाहते हैं, अधिक से अधिक लोग सरकारी नौकरी में जाना चाहते हैं। यही बेरोजगारी का मुख्य कारण है कि शिक्षित और अशिक्षित के बीच सुविधाओं का बहुत अंतर हो गया है। इस समस्या का समाधान यह है कि पहली बात श्रम की मांग और श्रम का मूल्य तथा श्रम का सम्मान बढ़ाया जाए, दूसरी बात शिक्षा का बजट पूरी तरह बंद कर दिया जाए और वह बजट श्रममूल्य वृद्धि में लगाया जाए, तीसरी बार सरकारी कर्मचारियों की वेतन वृद्धि पूरी तरह रोक दी जाए और यदि संभव हो तो धीरे-धीरे वेतन कम कर दिया जाए। मेरे विचार से बेरोजगारी का बहुत जल्दी समाधान निकल जाएगा। श्रम और बुद्धि तथा शिक्षा और ज्ञान के बीच बढ़ती हुई दूरी को कम करना ही वर्तमान समस्या का समाधान है।

मुझे तीन प्रश्नों के उत्तर चाहिए थे जिन पर अभी तक कोई उत्तर नहीं आया। पहली बात यह है कि हम गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी, कृषि उत्पादकों के उत्पादन और उपभोग की वस्तुओं पर टैक्स लगाकर शिक्षा पर खर्च कर रहे हैं, क्या यह न्यायोचित है? दूसरा प्रश्न है कि क्या हम एक पांच व्यक्तियों के परिवार को कम से कम ₹300 प्रतिदिन के रोजगार की गारंटी नहीं दे सकते? क्या हम सरकारी कर्मचारियों का वेतन बाजार के अनुसार करके, नरेगा की मदद नहीं कर सकते? क्या हम नरेगा की मजदूरी ₹300 प्रतिदिन प्रति परिवार नहीं कर सकते? तीसरा मेरा प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा पर होने वाला खर्च शिक्षा प्राप्त कर रहे लोगों से या शिक्षा प्राप्त करके लाभ उठा रहे लोगों से नहीं लिया जाना चाहिए? क्या शिक्षा प्राप्त व्यक्ति उचित रोजगार की प्रतीक्षा में होने के बाद भी बेरोजगार माना जाना चाहिए? इन प्रश्नों पर चर्चा होने से ही न्यायोचित दिशा में हम बढ़ सकेंगे। मैंने यह कभी नहीं कहा है कि शिक्षा को बंद कर दिया जाए। मैंने यह कहा है कि शिक्षा और रोजगार इन दोनों के बीच इस प्रकार संतुलन बिठाया जाए कि शिक्षा रोजगार के लिए ना हो, योग्यता के लिए हो, ज्ञान के लिए हो। शिक्षा नौकरी के

लिए ना हो, यदि शिक्षा और नौकरी को एक साथ जोड़ा जाएगा, तो यह श्रम के साथ अन्याय होगा। मैं कभी इस पक्ष में नहीं हूँ कि श्रम का शोषण करने के बाद शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए। मेरे विचार से या तो शिक्षा और श्रम दोनों को बाजार में स्वतंत्र छोड़ दिया जाए अन्यथा यदि किसी की मदद करनी जरूरी हो तो श्रम की मदद करनी चाहिए शिक्षा की नहीं।

महंगाई और बेरोजगारी की जो परिभाषाएं बनी हुई है, वह परिभाषाएं गलत हैं। विदेश की परिभाषा को भारत ने आंख बंद करके स्वीकार कर लिया है। भारत के दोनों दलों के नेता महंगाई और बेरोजगारी की परिभाषा में सुधार करने के लिए तैयार नहीं है। मैं इस बात की चुनौती देता हूँ कि यह दोनों परिभाषाएं गलत हैं। महंगाई तो लगातार घट रही है, लेकिन बेरोजगारी भी गलत परिभाषा के कारण बढ़ी हुई बताई जा रही है। वास्तव में शिक्षित व्यक्ति बेरोजगार हो ही नहीं सकता, जब तक कि श्रम की मांग बनी हुई है। मैं चाहता हूँ कि हम लोग महंगाई और बेरोजगारी पर खुलकर चर्चा करें, और सभी राजनेताओं को खुली चुनौती दें कि वह महंगाई बेरोजगारी पर चर्चा करें। इन दोनों शब्दों ने 70 वर्षों तक हम लोगों को भ्रम में डालकर रखा और उसका यह परिणाम है कि राजनीतिक दल अपनी दुकानदारी चलाते रहते हैं, सरकारी कर्मचारी इसका लाभ उठाते हैं और हम नागरिक इससे ठगे जाते हैं। हम लोग प्रतिदिन 8:00 बजे से 9:00 तक जूम पर बैठकर अलग-अलग विषयों पर चर्चा करते हैं। किसी भी दिन इन दोनों विषयों पर हम चर्चा करने के लिए तैयार हैं। इस विषय पर कोई नेता चर्चा करना चाहे तो वह आ सकता है। हम इन विषयों पर चर्चा करने के लिए हर समय तैयार हैं। रात 8:00 बजे से 9:00 तक चर्चा के दिए हम देश के सभी नेताओं को चुनौती देते हैं।

**एक झूठ 'रोहित वेमुला' के नाम पर दुकानदारी :** सारी दुनिया में साम्यवादियों को सबसे अधिक चालाक माना जाता है। उनके तर्क शक्ति बहुत मजबूत होती है, वे वैचारिक धरातल पर दूसरों को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। वह भारत में भले ही राजनीतिक ताकत के रूप में बहुत मजबूत नहीं हो पाए, किंतु वैचारिक शक्ति के मामले में वे पूरे भारत में सबसे आगे हो गए थे। पिछले 20 वर्षों में साम्यवाद की नकल करके संघ परिवार ने भी उसी तरह वैचारिक धरातल पर अपनी शक्ति मजबूत करने का प्रयास किया। नरेंद्र मोदी के आने के बाद संघ परिवार को कुछ और ताकत मिली और उस ताकत का ही परिणाम हुआ, कि संघ परिवार साम्यवादी विचारधारा के सामने एक चुनौती के रूप में खड़ा हुआ। यह साम्यवाद की ही शक्ति

थी कि रोहित वेमुला के एक झूठे मामले को वह इतना अधिक बढ़ाने में सफल हो गया, कि वह दुनिया का एक प्रमुख मुद्दा बनने लगा। अब 8 वर्षों के बाद सरकार ने यह स्पष्ट किया है, कि रोहित वेमुला एक सवर्ण व्यक्ति था। जिसने झूठ बोलकर अपने को अछूत घोषित कर दिया था। जब उसकी पोल खुली तो पोल खुलने के डर से उसने अपनी आत्महत्या कर ली, और उस आत्महत्या को साम्यवादियों ने तथा रोहित वेमुला की मां ने एक हथियार के रूप में प्रयोग किया। ऐसी दुकानदारी चलाई कि रोहित वेमूला का नाम देशभर में चर्चा में आ गया। बड़ी मात्रा में इस मामले में धन भी इकट्ठा किया गया, और आम लोग यह मानने लगे कि रोहित वेमुला वास्तव में अछूत जाति का था। अब जांच होने के बाद यह बात साफ हुई कि साम्यवादियों ने एक झूठ को सच के समान सिद्ध कर दिया और सारे देश को इतने वर्षों तक अंधेरे में रखा। मुझे दुःख है कि इस झूठ को प्रमाणित करने में भी हमारी सरकारी व्यवस्था को कितने अधिक वर्ष लग गए, अन्यथा इस झूठ को एक दिन में ही बेनकाब किया जा सकता था। यदि सरकार समय से कार्यवाही करती तो साम्यवादियों और रोहित वेमुला की मां को इस तरह दुकानदारी करने का लाभ नहीं मिल पाता।

रोहित वेमुला के मामले में तेलंगाना सरकार ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, इसके संबंध में कांग्रेस पार्टी ने घोषणा की है, कि यदि केंद्र में हमारी सरकार बनती है, तो हम रोहित वेमुला जैसे मामलों के निपटारे के लिए एक अलग से कानून बनाएंगे। जिससे कोई सरकार इस प्रकार के मामलों में हस्तक्षेप न कर सके। मुझे आश्चर्य है कि कांग्रेस पार्टी किस प्रकार समाज का बंटवारा करना चाहती है? यदि कोई सवर्ण चालाकी करके अवर्ण बन जाता है और उस अवर्ण के साथ यदि कोई कानूनी कार्यवाही होती है तब उसे अवर्ण ही माना जाएगा सवर्ण नहीं? इस प्रकार का यदि कोई कानून बनता है, तो मेरे विचार से यह बहुत घातक सोच है। कांग्रेस के महासचिव केसी वेणुगोपाल ने जो कुछ कहा है, उस विषय पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। देश को अब और लंबे समय तक आदिवासी-गैरआदिवासी, दलित-सवर्ण, महिला और पुरुष इसमें बांटने की जरूरत नहीं है, बल्कि गांधी के बताए रास्ते पर चलने की जरूरत है, जिसमें वर्ग-समन्वय को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

**राहुल गाँधी वर्सेज हिंदुत्व होता जा रहा चुनाव :** प्रियंका गांधी ने यह स्पष्ट किया है कि दो चरणों के बाद, भारतीय जनता पार्टी पूरी तरह मुसलमानों के विरुद्ध हिंदू एकत्रीकरण में लग

गई है, मुझे भी यह बात सच दिखती है। वैसे तो शुरू से ही चुनाव हिंदू मुसलमान पर हो रहा है, लेकिन पिछले एक सप्ताह से कुछ ज्यादा ही इस दिशा में केंद्रित हो गया है। क्योंकि भारतीय जनता पार्टी इस मुद्दे पर बिल्कुल सामने आ गई है। एक तरफ राहुल गांधी अपनी पूरी ताकत तीन दिशाओं में लगा रहे हैं, एक है मुस्लिम तुष्टिकरण, दूसरा है हिंदुओं को जातियों में विभाजित कर उनको कमजोर करना, और तीसरा है संपत्ति का बंटवारा करना, अमीरों की संपत्ति लेकर गरीबों को देना और वह भी जातीय आधार पर व्यक्तिगत आधार पर नहीं। भारतीय जनता पार्टी ने भी इन तीनों मुद्दों पर कमर कस ली है। भारतीय जनता पार्टी चाहती है कि हिंदू एकजुट रहें, हिंदुओं को भी मुसलमान के समान ही बराबरी का अधिकार मिले। आर्थिक स्थिति में सबको योग्यता अनुसार धन संग्रह की छूट हो, संपत्ति के मामले में किसी भी रूप में सरकार का कोई हस्तक्षेप ना हो। इस तरह चुनावी संघर्ष बिल्कुल दो विचारधाराओं पर केंद्रित हो गया है। मैं गांधी को मानने वाला हूँ, मैं सांप्रदायिकता जातिवाद और साम्यवाद का विरोधी हूँ। मैं यह मानता हूँ कि वर्तमान भारत में हिंदुओं को एकजुट होकर ही बराबरी का अधिकार मिल सकता है, अन्यथा नहीं। संपत्ति का विभाजन भी योग्यता अनुसार ही होना चाहिए और जातिवाद को धीरे-धीरे कमजोर या समाप्त करने की जरूरत है। इसलिए मैं भारत की जनता और विशेष कर हिंदुओं से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि वह कांग्रेस पार्टी की योजना को असफल कर दें।

राजनीतिक आधार पर भारत और हिंदुत्व शब्द एक-दूसरे के साथ जुड़ गए हैं। यह हिंदुओं का सौभाग्य है कि उन्हें अब भारत में नरेंद्र मोदी सरीखा एक नेतृत्व मिला है, जो सन्यासी है, समझदार है, ईमानदार है। अब तक भारत को इस प्रकार के सद्गुणों वाला नेता नहीं मिलने के कारण ही ऐसा लगने लगा था, कि हिंदुत्व लगातार खतरे की ओर जा रहा है। जैसे-जैसे अब भारत में हिंदुत्व संगठित हो रहा है, नरेंद्र मोदी के साथ जुड़ रहा है, वैसे-वैसे सारी दुनिया चिंतित हो रही है। सारी दुनिया इस बात से परेशान है, कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हिंदुत्व मजबूत होता जा रहा है। इस चुनौती का सामना करने के लिए दुनिया की ताकतों ने अलग-अलग तरीके से हिंदुत्व पर आक्रमण की योजना बनाई है। उन्होंने एक तरफ राहुल गांधी के नेतृत्व में मुसलमान को जोड़कर हिंदुत्व पर लगातार आक्रमण करने की योजना बनाई, तो दूसरी ओर जातिवाद को मजबूत करके भी हिंदुओं की एकता को छिन्न-भिन्न करने की लगातार कोशिश की है। एक अलग प्रयत्न के अंतर्गत साम्यवादी देश राहुल गांधी के ही नेतृत्व

में वामपंथी विचारों को आगे बढ़ाने का भी सपना देख रहे हैं। इस तरह साम्प्रदायिक ताकतें भी राहुल गांधी में अपना भविष्य देख रही हैं और कम्युनिस्ट ताकतें भी। भारत के हिंदुत्व पर यह बात निर्भर करती है, कि वह इस्लामी साम्यवादी और पश्चिमी जगत की एकजुटता की नीति से किस प्रकार मुकाबला कर पाती हैं। यह स्पष्ट है कि वर्तमान चुनाव इस राजनीतिक शक्ति परीक्षण की शुरुआत है। यदि वर्तमान चुनाव में हिंदू एकजुट होकर मुकाबला कर लेता है, तो भविष्य का रास्ता बहुत आसान हो जाएगा। यह भारत के हिंदुत्व के लिए महत्वपूर्ण समय है कि हम सांप्रदायिकता, जातीय टकराव और साम्यवाद का एकजुट होकर मुकाबला कर सकें।

**साम्यवाद के हाथों खेल रहे राहुल गाँधी :** धीरे-धीरे यह बात बिल्कुल साफ होती जा रही है, कि राहुल गांधी हिंदुत्व से भी बहुत दूर चले गए हैं, और राष्ट्रवाद से भी। वर्तमान समय में राहुल गांधी पूरी ताकत लगाकर, हिंदू विचारधारा या हमारी हिंदू संस्कृति को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं, साथ-साथ वह भारत की एकता और अखंडता पर भी खतरा पैदा कर रहे हैं। जिस तरह राहुल गांधी मुस्लिम सांप्रदायिकता के पक्ष में डटकर खड़े हैं, साथ ही जल, जंगल, जमीन पर आदिवासियों का पहला अधिकार बता रहे हैं, और आदिवासी ही भारत के मूल निवासी हैं बाकी सब बाहरी माने जाने चाहिए, प्रचारित कर रहे है यह बहुत ही घातक और हानिकारक विचार है। राहुल गांधी साम्यवाद की उस असफल अवधारणा को फिर से जीवित करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें कहा गया है कि देश की सारी संपत्ति पर सब लोगों का समान बंटवारा होना चाहिए। मेरे विचार से चीन और रूस भी धीरे-धीरे इन विचारों से किनारा कर चुके हैं, क्योंकि यह बात सिद्ध हो चुकी है, कि इस प्रकार की अवधारणा उत्पादन को निरुत्साहित करती है और वर्ग-संघर्ष पैदा करती है। राहुल गांधी का हर वाक्य वर्ग-संघर्ष को बढ़ाने वाला है। साफ दिखता है कि राहुल गांधी साम्यवाद के हाथों खेल रहे हैं। राहुल गांधी ने कल एक बात और कही है, कि हम संविधान में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं होने देंगे, भले ही मेरी जान चली जाए। मैं राहुल गांधी को यह संदेश देना चाहता हूँ, कि यदि संविधान को रूढ़ बना दिया गया, समय पर संविधान में संशोधन रोक दिए गए, तो हम राहुल गांधी के जान की परवाह नहीं करेंगे, हम तो संविधान संशोधन करने की मांग करते रहेंगे। यदि आवश्यकता होगी, तो जनमत संग्रह के माध्यम से संविधान के मूल स्वरूप में भी बदलाव किया जा सकता है, भले ही उसे रोकने के लिए कोई अपनी जान दे दे।

**क्या हो 2024 के सरकार का एजेंडा :**

यह बात बिल्कुल साफ हो गई है कि भारत के वर्तमान राजनीतिक वातावरण में मैं नेहरू परिवार तथा अन्य राजनेताओं की तुलना में नरेंद्र मोदी मोहन भागवत की जोड़ी को बहुत अधिक अच्छा मान रहा हूँ, लेकिन मेरे मन में यह भी धारणा बनी हुई है कि अगले चुनाव में पूर्ण बहुमत यदि मिल जाता है तो मैं नरेंद्र मोदी से क्या-क्या उम्मीद कर सकता हूँ।

मेरे विचार में पहली बात है कि नरेंद्र मोदी को पूरे देश में समान नागरिक संहिता लागू करनी चाहिए। जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र, भाषा, उम्र, गरीब-अमीर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव ना करते हुए प्रत्येक नागरिक को एक इकाई मानकर कानून बनना चाहिए।

दूसरी बात मैं यह चाहता हूँ कि परिवार और गांव को संवैधानिक मान्यता दे देनी चाहिए।

तीसरी बात कि परिवार को एक संयुक्त परिवार बनाना चाहिए, सम्मिलित परिवार की धारणा समाप्त कर देनी चाहिए। परिवार में व्यक्तिगत संपत्ति का अधिकार पूरी तरह समाप्त करके संयुक्त संपत्ति का अधिकार होना चाहिए।

चौथी बात कि सरकार को अनावश्यक कानून हटा देने चाहिए, विभाग बहुत कम कर देना चाहिए, सुरक्षा, न्याय, वित्त, विदेश, यही विभाग सरकार के पास रहे बाकी सारा काम समाज पर छोड़ देना चाहिए।

पांचवां काम यह है, कि संविधान को तंत्र से स्वतंत्र कर देना चाहिए, तंत्र को संविधान संशोधन में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और संविधान संशोधन या परिवर्तन के लिए एक संविधान सभा बनाई जानी चाहिए, जो आम जनता के द्वारा निर्मित हो, उसमें तंत्र का कोई हस्तक्षेप ना हो।

इस तरह यदि नरेंद्र मोदी पांच मूलभूत बदलाव करते हैं तो मैं यह समझूंगा कि नरेंद्र मोदी हमारी उम्मीदों के अनुसार कार्य कर रहे हैं। मैं फिर कहना चाहता हूँ कि नरेंद्र मोदी के अतिरिक्त वर्तमान समय में हमें इस दिशा में किसी अन्य से कुछ भी करने की उम्मीद नहीं है और इसलिए मैं नरेंद्र मोदी से ही इस प्रकार की उम्मीद कर रहा हूँ।

यह बात स्पष्ट है कि हम वर्तमान चुनाव में नरेंद्र मोदी का आंख बंद करके समर्थन कर रहे हैं, क्योंकि हमने उनसे पांच विषयों पर काम करने की उम्मीद की है। समान नागरिक

संहिता लागू होने से यह लाभ होगा कि, भारत में हिंदू मुस्लिम की समस्या समाप्त हो जाएगी, जातिवादी टकराव भी खत्म हो जाएगा, आरक्षण और हिंदू कोड बिल भी नहीं रहेगा, अल्पसंख्यक तुष्टिकरण या महिला सशक्तिकरण का नारा भी अपने आप खत्म हो जाएगा, क्षेत्रीयता का विवाद भी नहीं रहेगा, और भाषा का विवाद भी नहीं होगा। भारत में ना कोई अल्पसंख्यक होगा, ना बहुसंख्यक होगा। प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार समान होंगे। इसी तरह परिवार और गांव को यदि संवैधानिक अधिकार दे दिए गए तो 90% समस्याएं परिवार और गांव मिलकर संभाल लेंगे। सरकार को अपना वजन कम करने में मदद मिलेगी। इससे राज्य सुरक्षा और न्याय पर विशेष ध्यान दे सकेगा। पुलिस और न्यायालय पर भी बहुत कम वजन रह जाएगा। तीसरी बात जो मैंने कही है कि, परिवारों को सम्मिलित परिवार की जगह संयुक्त परिवार बना दिया जाए, इससे संपत्ति परिवार की संयुक्त हो जाएगी, व्यक्तिगत नहीं रहेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि, व्यक्ति के स्वभाव में जो हिंसा और स्वार्थ बढ़ रहा है, वह घटेगा क्योंकि संपत्ति के व्यक्तिगत अधिकार के कारण स्वार्थ बढ़ रहा है, और निर्णय की स्वतंत्रता के कारण व्यक्ति के अंदर आक्रोश बढ़ रहा है, इस समस्या का इससे समाधान हो जाएगा। चौथी बात यह है कि सरकार अनावश्यक कानून को हटा दे। मेरे विचार से भारत में 90% तक अनावश्यक कानून बने हुए हैं, इन कानून को हटाकर परिवार और गांव को दे दिया जाए, तो वह सब कुछ संभाल लेंगे। पांचवी बात यह कही है कि, संविधान संशोधन का अधिकार एक अलग संविधान सभा को दे दिया जाए, इससे कानून बनाने वाली इकाई अलग हो जाएगी और कानून का पालन करने वाली अलग। न्यायपालिका और विधायिका के बीच जो टकराव चल रहा है कि ऊपर कौन है, वह टकराव भी खत्म हो जाएगा, 'संविधान सभा' संविधान संशोधन के सारे अधिकार अपने पास ले लेगी। संविधान में यदि कोई व्याख्या करनी है वह व्याख्या भी संविधान सभा करेगी, न्यायालय नहीं। इस तरह देश में संविधान के अंतर्गत न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका कार्य करने के लिए बाध्य हो जाएंगे, मनमानी नहीं कर सकेंगे। इस तरह हम लोगों ने जो पांच मांगे रखी हैं, यह हमारे देश की ही नहीं बल्कि दुनिया की समस्याओं के समाधान की शुरुआत कर सकते हैं। अब भारत दुनिया की नकल करने के लिए नहीं बल्कि दुनिया का मार्गदर्शन करने के दिशा में आगे बढ़ना चाहता है, और इसकी शुरुआत नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम कर सकते हैं।

**अल्पमत की तरफ बढ़ रहे हिंदू :** भारत में स्वतंत्रता के समय हिंदुओं की संख्या लगभग 84% थी और, मुसलमान की संख्या पाकिस्तान बन जाने के बाद 9% करीब बची थी। उस समय हिंदुओं के प्रमुख नेता सरदार पटेल माने जाते थे और मुसलमान के प्रमुख नेता जवाहरलाल नेहरू माने जाते थे। गांधी जी बिल्कुल बीच में थे क्योंकि गांधी जी को हिंदुओं का भी पूरा समर्थन था और भारत में रह गए मुट्ठी भर मुसलमान का भी । गांधी जी पूरी तरह हिंदू थे अर्थात् वे संगठन वाद पर विश्वास नहीं करते थे और सांप्रदायिकता के पूरी तरह खिलाफ तो थे। स्वतंत्रता के शीघ्र बाद ही किसी सांप्रदायिक हिंदू ने गांधी की हत्या कर दी और गांधी हत्या के बाद सरदार पटेल का पक्ष कमजोर हो गया। नेहरू लगातार मजबूत होते चले गए और सरदार पटेल की मृत्यु के बाद तो हिंदुओं का पक्षधर कोई नेता बचा ही नहीं क्योंकि संघ परिवार पर हिंदुओं ने कभी विश्वास नहीं किया और संघ परिवार के अतिरिक्त हिंदुओं के पास कोई अन्य नेता नहीं था। जबकि मुसलमान के पास जवाहरलाल नेहरू सरीखा एक बहुत बड़ा नेता था, जो उस समय प्रधानमंत्री भी था। परिणाम हुआ कि स्वतंत्रता के बाद के 70 वर्षों में मुसलमान की संख्या बढ़कर डेढ़ गुना हो गई और हिंदुओं की संख्या उतनी ही घट गई, अभी जो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं, उसके अनुसार हिंदुओं की संख्या कुल आबादी का 6% और हिंदुओं की जनसंख्या का 8% घटी है तो मुसलमान की जनसंख्या कुल आबादी में 5% और मुसलमान की आबादी में 50% बढ़ गई है । मैंने स्वयं देखा है कि हमारे क्षेत्र में मुसलमान की आबादी बढ़कर दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है। स्पष्ट है कि नेहरू परिवार अपनी योजना में सफल है, यही कारण है कि राहुल गांधी खुलेआम यह घोषणा कर रहे हैं, कि हम चुनाव आसानी से जीत जाएंगे। क्योंकि उन्हें यह विश्वास है कि मुसलमान की आबादी दोगुनी तक बढ़ गई है। साथ ही नेहरू परिवार को पाकिस्तान का भी साथ मिलता रहता है। यह लोग हमेशा पाकिस्तान के पक्ष में भी आवाज लगाते हैं। हिंदुओं की दो कमजोरी भी नेहरू परिवार के इस्लामीकरण के पक्ष में जाती हैं, वह है पहला जातिगत भेदभाव और दूसरा है गांधी हत्या का कलंक। हिंदुओं की इन दो कमजोरी का नेहरू खानदान हमेशा लाभ उठाता रहता है, आज भी चुनाव में नेहरू परिवार इन्हीं दो कमजोरी को उजागर करता है। हर भाषण में राहुल गांधी आदिवासी, दलित और गांधी हत्या का जरूर विरोध करते हैं, लेकिन उन्होंने कभी इस बात की चर्चा नहीं किस पाकिस्तान कैसे गलत है? नेहरू परिवार के चमचे भी हमेशा कभी पाकिस्तान का पक्ष लेते रहते हैं, तो कभी चीन की अर्थव्यवस्था की प्रशंसा करते हैं। अब

हिंदुओं के लिए यह अप्रत्यक्ष रूप से जीवन-मरण का प्रश्न आ गया है कि, वह अपना अस्तित्व बचाने के लिए नेहरू परिवार इस्लाम और साम्यवाद के गठजोड़ से किस तरह मुकाबला करें। क्योंकि पूरी दुनिया संगठित हिंदुत्व को पसंद नहीं कर रही है, और संगठित हिंदुत्व के अतिरिक्त वर्तमान चुनाव में इस नेहरू-इस्लाम-साम्यवाद की तिकड़ी का मुकाबला करने का कोई और मध्यम नहीं है। हिंदुओं को यह बात याद रखनी चाहिए कि यदि धीरे-धीरे मुसलमान बढ़कर 25% भी हो गए, तो कांग्रेस, मुसलमान और साम्यवादी मिलकर बंदूक की जोर पर हिंदुओं को अल्पमत में ला देंगे।

**कांग्रेस क्यों नहीं समान नागरिक संहिता पर बात करती :** भारत के चुनाव की सारी दुनिया में चर्चा हो रही है। लगातार नेहरू परिवार पर यह आरोप लगाया जा रहा है, कि चाहे धार्मिक आधार हो या वोटों का लालच हो, लेकिन नेहरू परिवार स्वतंत्रता के बाद ही लगातार मुसलमान के पक्ष में खड़ा रहा है। वर्तमान राहुल गांधी पर भी यही आरोप लग रहा है, लेकिन यह बेशर्मी की हद ही है कि एक बार भी नेहरू परिवार का कोई आदमी सामने आकर नहीं बोल रहा है, कि हम किसी प्रकार का हिंदू-मुसलमान का भेद नहीं चाहते। हम भारत के प्रत्येक व्यक्ति को बराबर देखना चाहते हैं। हम मुसलमान को अलग से आरक्षण नहीं देंगे, हम मुसलमान को किसी प्रकार की अलग रियायत नहीं देंगे, जो भी रियायत या सुविधा होगी वह हिंदू-मुसलमान सबके लिए बराबर होगी, यह बात बोलने में कांग्रेस पार्टी के लोगों को शर्म आ रही है। यह बात राहुल गांधी तो बोल ही नहीं पा रहे हैं, यहां तक कि राहुल गांधी के खास लोग पाकिस्तान की भी तारीफ कर रहे हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि इस प्रकार सांप्रदायिकता के समर्थक कुछ गिने-चुने हिंदू भी इन अर्धमुस्लिम नेहरू परिवार के पक्ष में खड़े हो जाते हैं, पता नहीं उन्हें इस संबंध में क्या प्राप्त होता है। मैं फिर से निवेदन करता हूँ कि, भारत को हिंदू राष्ट्र नहीं शरिया से नहीं, भारत संविधान से चलेगा। भारत में हिंदू-मुसलमान का कोई भेद नहीं होना चाहिए, सबके लिए बराबर कानून होना चाहिए। जो भी लोग राहुल गांधी के साथ ईमानदारी से खड़े हैं, उन्हें यह प्रयत्न करना चाहिए कि एक बार राहुल गांधी से समान नागरिक संहिता के समर्थन पर बुला दीजिए। अब भारत का हिंदू दूसरे दर्जे का नागरिक बनकर नहीं रह सकता, अब भारत का हिंदू फिर से विभाजन का खतरा नहीं झेल सकता।

**विपक्ष का एक मजबूत विकल्प हो सकते हैं अरविन्द केजरीवाल :** अरविंद केजरीवाल जेल से जमानत पर छूट कर आ गए हैं, यह बात तो नहीं कहीं जा सकती है कि वह मेरिट पर छूटे हैं या किसी जुगाड़ से छूटे हैं, लेकिन छूट गए हैं या बात सही है और यह भी संभावना है कि दोबारा इस मामले में जेल भी जाना पड़े। मैं अरविंद केजरीवाल को लंबे समय से जानता हूँ। मैंने कई बार लिखा भी है कि प्रधानमंत्री की योग्यता के मामले में नरेंद्र मोदी के बाद नीतीश कुमार और नीतीश के बाद अरविंद की ही योग्यता है, अन्य चौथा कोई प्रधानमंत्री बनने की योग्यता नहीं रखता। वर्तमान समय में प्रधानमंत्री का मामला तो साफ हो चुका है कि नरेंद्र मोदी के सामने अभी कोई नहीं है लेकिन विपक्ष के नेता के रूप में नीतीश कुमार ने अपने को किनारे कर लिया है और सीधी टक्कर अरविंद केजरीवाल और राहुल गांधी के बीच में है जिसमें अरविंद केजरीवाल मजबूत पड़ सकते हैं क्योंकि राहुल गांधी में शराफत अधिक है चतुराई कम है, अरविंद केजरीवाल में चतुराई धूर्तता की सीमा तक चली जाती है जो राजनीति का एक आवश्यक गुण माना जाता है। इसलिए विपक्ष के नेता के रूप में अरविंद केजरीवाल की संभावना अधिक दिखती है। नरेंद्र मोदी की तुलना में अरविंद केजरीवाल परिश्रमी भी ज्यादा है और चालाक भी ज्यादा। अरविंद केजरीवाल में मोदी की अपेक्षा तानाशाही के लक्षण भी बहुत ज्यादा हैं, नरेंद्र मोदी में चालाकी के साथ-साथ शराफत के भी गुण है, ईमानदारी के भी गुण हैं, अरविंद केजरीवाल इस प्रकार की कमजोरी से मुक्त है । इस तरह अरविंद केजरीवाल विपक्षी नेता के रूप में मजबूती से कदम बढ़ा रहे हैं । जेल से छूटने के बाद अरविंद केजरीवाल के भाषण पर यदि नजर दौड़ाएं तो आप देखेंगे कि उन्होंने साफ-साफ कहा की बहुमत किसी दल को नहीं मिलेगा। भारतीय जनता पार्टी 230 सीटों तक सिमट जाएगी और सरकार बनाने में आम आदमी पार्टी की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। स्पष्ट है कि अरविंद केजरीवाल ने अपने पत्ते खुले रखे हैं, दूसरी बात अरविंद केजरीवाल ने यह कही है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद अमित शाह बन सकते हैं और ममता बनर्जी या कुछ अन्य मुख्यमंत्री भी जेल में डाले जा सकते हैं। तीसरी बात उन्होंने यह भी कही है कि मैं लालू प्रसाद यादव को अपना गुरु मानता हूँ। स्पष्ट है कि जेल की सजा होने के बाद जिस बेशर्मी से लालू प्रसाद यादव बड़े नेता बने रहे और आज भी राजनीति में उतने ही महत्वपूर्ण है, वह बेशर्मी अरविंद केजरीवाल को लालू प्रसाद से ही मिल सकती है, किसी अन्य जगह नहीं मिल सकती। इसलिए लालू को अपना गुरु मानकर अरविंद ने एक और संदेश दे दिया है। यह बात तो बिल्कुल साफ है कि

भारतीय राजनीति में अरविंद केजरीवाल ही एकमात्र ऐसे बड़े नेता हैं, जो किसी को भी धोखा दे सकते हैं, मैं भी बड़ी मुश्किल से अंतिम स्थिति में धोखा खाते-खाते बचा अन्यथा मैं भी उसी की श्रेणी में आ जाता, लेकिन यही धोखा देने की प्रवृत्ति अरविंद केजरीवाल का काल भी बन सकती है। अरविंद केजरीवाल ने जिन-जिन को धोखा दिया वे सब नेपथ्य में चले गए, लेकिन अरविंद केजरीवाल ने जिस तरह सिक्ख उग्रवादियों से धन लेकर उन्हें धोखा दिया है। वह एक खतरनाक स्थिति बन सकती है क्योंकि सिक्ख उग्रवादी अपने शत्रु को माफ कर सकते हैं लेकिन धोखा देने वाले को कभी माफ नहीं करते। इंदिरा गांधी भी इसका उदाहरण है और भी इसके अनेक उदाहरण आपको देखने को मिल सकते हैं। यदि अरविंद केजरीवाल ने सिक्ख उग्रवादियों से सैकड़ो करोड़ रूपया लेकर उनको धोखा दिया है, तो भविष्य में यह धोखा बुरे परिणाम भी दे सकता है। इसलिए अरविंद केजरीवाल के सामने यह बहुत बड़ा संकट है, कि वह सिक्ख उग्रवादियों को प्रसन्न करें या इस तरह धोखा दे, जिस तरह ममता बनर्जी ने बंगाल के नक्सलवादियों को दिया था। किस रास्ते पर जाएंगे यह अरविंद केजरीवाल सोचेंगे, लेकिन मेरे विचार से विपक्ष के नेता के रूप में कांग्रेस पार्टी का विकल्प अरविंद केजरीवाल ही दिख रहे हैं, और अरविंद केजरीवाल के लिए सबसे बड़ा खतरा सिक्ख उग्रवादी ही बन सकते हैं।

**उद्योगपतियों से रार ठानने का नतीजा :** राजनीतिक धरातल पर यह बात साफ होती जा रही है कि राहुल गांधी नेहरू की लाइन पर चलना चाहते हैं अर्थात साम्यवादी दिशा में। उद्योग धंधों को कमजोर करके सब कुछ सरकारीकरण कर देना, अधिक से अधिक सरकारी डिपार्टमेंट खोलकर सरकारी कर्मचारियों की संख्या बढ़ाना, अधिक से अधिक टैक्स वसूल करके जनता को बांटना, अधिक से अधिक विदेश से आयात करके आम लोगों को सस्ता सामान उपलब्ध कराना यह नेहरू की नीति रही है। राहुल पूरी ईमानदारी से इसी नीति पर चल रहे हैं, मनमोहन सिंह की सारी योजनाएं फेल की जा रही हैं। अभी-अभी उद्योगपतियों से राहुल के संबंध बहुत खराब हुए। राहुल गांधी यह सोच रहे थे कि उद्योगपतियों पर लगातार आक्रमण करने से उद्योगपति डर जाएंगे और कांग्रेस पार्टी को बड़ी मात्रा में धन देंगे लेकिन देश के उद्योगपतियों ने भी इस मामले में मजबूती दिखाई। दो चरण के चुनाव हो जाने के बाद सोनिया और प्रियंका को ऐसा महसूस हुआ कि हम चुनाव में बहुत कमजोर पड़ जाएंगे क्योंकि हमारे पास धन नहीं है और उद्योगपति डर नहीं रहे हैं । तब सोनिया ने उद्योगपतियों से बात करनी चाही,

उद्योगपतियों ने बात करने से इनकार कर दिया। तब सोनिया गांधी ने प्रमुख उद्योगपति को एक पत्र लिखकर धन की मांग की, यद्यपि इस पत्र से राहुल गांधी खिलाफ थे लेकिन सोनिया प्रियंका ने मिलकर उद्योगपतियों के साथ समझौता करना उचित समझा, तब देश के प्रमुख उद्योगपति ने कांग्रेस पार्टी को भारी आर्थिक मदद की जिसका उल्लेख नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण में किया। मेरे विचार से राहुल गांधी को अपनी नीतियों पर फिर से विचार करना चाहिए। उद्योगों को गुलाम बनाकर रखने से देश का वही हाल होगा जो मनमोहन सिंह के पहले था, जो बंगाल का हुआ, जो चीन का हो रहा है। चीन ने भी यदि उद्योगपतियों को छूट नहीं दी होती तो चीन बर्बाद हो गया होता। मैं राहुल गांधी से फिर निवेदन करना चाहता हूँ कि वह नेहरू की लाइन छोड़ें, उद्योगों को स्वतंत्रता दे, निर्यात बढ़ाने और सरकारी कर्मचारी और सरकारी करण के बारे में फिर से विचार करें। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की साम्यवादी नीति हमेशा घातक होगी। यदि राहुल गांधी ने पूंजीवाद  का विरोध करके साम्यवाद की दिशा पकड़ी तो राहुल खुद भी समाप्त होंगे, कांग्रेस को भी समाप्त करेंगे, देश को भी नुकसान पहुंचाएंगे।

**भारत को चाहिए आदर्श लोकतंत्र की गारंटी :** भारत में इस समय चुनाव अंतिम चरण में है, यह चुनाव सीधा-सीधा हिंदू मुसलमान पर हो रहा है। जहां भारतीय जनता पार्टी इस चुनाव को सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के रूप में देख रही है तो कांग्रेस पार्टी इस चुनाव को आर्थिक दशा में ले जाना चाहती है लेकिन प्रत्यक्षता भारतीय जनता पार्टी सफल होती दिख रही है । चुनाव हिंदू मुसलमान पर ही केंद्रित होते जा रहे हैं। मुख्य प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत का मुसलमान खतरनाक है, मेरे विचार से नहीं है। भारत का मुसलमान तभी खतरनाक होता है, जब उसके संगठन का किसी राजनीतिक दल के साथ तालमेल बन जाता है। जब भारत का मुसलमान यह अनुभव करता है कि वह संगठित होकर राजनीतिक दलों को ब्लैकमेल कर सकता है, तभी वह खतरनाक होता है अन्यथा नहीं होता। भारत का मुसलमान वर्तमान राजनीतिक वातावरण में अगर खतरनाक ना भी होना चाहे तो कम्युनिस्ट और कांग्रेस पार्टी उसे इस बात के लालच में फंसा कर रखती है कि तुम्हें एकजुट रहना चाहिए, तुम्हें हमारे साथ रहना चाहिए, तुम्हें मोदी का विरोध करना चाहिए। यही कारण है कि भारत का मुसलमान कट्टर होता जा रहा है, सांप्रदायिक होता जा रहा है, हिंसक होता जा रहा है। राजनीतिक दलों और धर्म का जुड़ाव ही सांप्रदायिकता का प्रमुख कारण है। यह चुनाव यदि कांग्रेस पार्टी का घमंड तोड़ देती है,उसकी

योजना फेल हो जाती है तो अगले 5 वर्षों में मुसलमान की उम्मीद भी टूट जाएगी और तब हम भारत में सांप्रदायिकता को कम होते हुए देख सकेंगे।

भारत में सांप्रदायिकता को दूर करने का एक ही आधार है कि सत्ता और धर्म इन दोनों का संगठित तालमेल समाप्त हो जाए, भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनने का खतरा समाप्त हो जाए और हिंदू राष्ट्र बनने की आवश्यकता समाप्त हो जाए। भारत को ना हिंदू राष्ट्र चाहिए, ना मुस्लिम राष्ट्र चाहिए न शरिया चाहिए। भारत को समान नागरिक संहिता चाहिए, भारत को प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार मिलना चाहिए, भारत में प्रत्येक व्यक्ति को मौलिक अधिकार की गारंटी मिलनी चाहिए, यही भारत में आदर्श लोकतंत्र माना जा सकता है।

**महंगाई या तुष्टिकरण क्या चाहता है देश :** कल कांग्रेस की प्रमुख नेता प्रियंका गांधी ने इस बात की चुनौती दी, कि नरेंद्र मोदी महंगाई और बेरोजगारी पर एक चुनाव लड़कर देख ले उन्हें पता चल जाएगा कि उनको कितना जन समर्थन है। दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी ने यह चुनौती दी है, कि कांग्रेस पार्टी मुस्लिम आरक्षण पर एक चुनाव लड़कर देख ले उसको पता चल जाएगा कि उसको कितना जन समर्थन है। मैं समझता हूँ कि वर्तमान भारत में महंगाई नाम की कोई समस्या है ही नहीं महंगाई तो लगातार घटती जा रही है। भारतीय जनता पार्टी, नरेंद्र मोदी इस चुनौती को इसलिए स्वीकार नहीं कर सकते, क्योंकि पिछले 60 वर्षों से भाजपा और नरेंद्र मोदी भी महंगाई का हल्ला करते रहे हैं। महंगाई के नाम पर ही जब आप चुनाव लड़ते रहे हैं, तो आज सच्चाई को स्वीकार नहीं कर सकते। इसलिए महंगाई के नाम पर नरेंद्र मोदी पीछे हट जाते हैं, जबकि महंगाई है ही नहीं। बेरोजगारी के मामले में भी इसी तरह नरेंद्र मोदी और भाजपा 70 वर्षों तक बेरोजगारी का हल्ला करते रहे हैं, जबकि सच्चाई यह है कि शिक्षित बेरोजगारी पूरी तरह शून्य हो गई है। सरकारी नौकरी का हल्ला करना बिल्कुल बेकार है, क्योंकि जिस गति से शिक्षा बढ़ रही है, उस गति से नौकरी नहीं दी जा सकती। जिस गति से एआई बढ़ रही है, उस गति से नौकरी घटना स्वाभाविक है। नौकरी को शिक्षा रोजगार से नहीं जोड़ा जा सकता, सिर्फ श्रमजीवी ही बेरोजगार माना जा सकता है, शिक्षित नहीं। लेकिन यदि हिंदू-मुसलमान पर एक बार चुनाव हो जाए तो कांग्रेस पार्टी को पूरे भारत में एक भी सीट नहीं मिलेगी, मुसलमान की भी नहीं है। इसीलिए कांग्रेस पार्टी ने यह घोषणा कर दी है कि यदि

अगले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी जीत गई तो भविष्य में चुनाव कभी नहीं होंगे, क्योंकि कांग्रेस पार्टी अल्पसंख्यक तुष्टीकरण छोड़ेगी नहीं, और अल्पसंख्यक के नाम पर किसी भी चुनाव में कांग्रेस पार्टी एक भी सीट नहीं जीत सकेगी। कांग्रेस पार्टी के लिए यह चुनाव जीवन मरण का प्रश्न है, इसलिए कांग्रेस पार्टी ने यह घोषणा कर दी है, कि इस चुनाव के बाद भविष्य में कोई चुनाव लड़ने का अवसर नहीं मिलेगा, मैं समझता हूँ कि चुनाव ठीक दिशा में जा रहा है।

**कानूनी तिकड़मबाजी में फंसे हिंदुत्व के लिए यह चुनाव एक अवसर :**

राहुल गांधी ने एक भाषण में कहा है कि वर्तमान चुनाव विचारधाराओं का संघर्ष है, राजनीतिक टकराव नहीं। मैं राहुल गांधी से सहमत हूँ, पंडित नेहरू ने स्वतंत्रता के तत्काल बाद ही हिंदुओं और मुसलमानो के बीच वैचारिक टकराव शुरू कर दिया था। बड़ी चालाकी से उन्होंने इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, इसाई सब को धर्म घोषित कर दिया, और हिंदुओं को विचारधारा घोषित किया धर्म नहीं। परिणाम हुआ कि धर्म के नाम पर संगठन बना कर वे सब लोग हिंदुओं पर हावी हो गए। नेहरू ने एक ऐसा संविधान बना दिया जिस संविधान के माध्यम से भी नेहरू को सुविधा हुई। न्यायपालिका में चुने हुए वामपंथियों को भर दिया गया, कानून भी इस प्रकार के बने जो एक तरफ मुसलमान को धर्म के नाम पर एकजुट करते थे, तो हिंदुओं को जाति के नाम पर आदिवासी और दलित के नाम पर एक-दूसरे से अलग करते थे, क्योंकि हिंदू को धर्म नहीं माना गया। अब लंबे समय बाद नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं, तो नरेंद्र मोदी के पैरों में संविधान की एक मजबूत रस्सी बंधी हुई है। उस संविधान की जो नेहरू ने बनवाया था, उस संविधान की जिसकी चाबी नेहरू खानदान के पास है। नरेंद्र मोदी के हाथ उस न्यायपालिका ने बांध रखे हैं, जिसमें वामपंथियों का वर्चस्व है। नरेंद्र मोदी की जबान उन कम्युनिस्टों ने बांध रखी है, जो कम्युनिस्ट नेहरू खानदान से पुरस्कार प्राप्त है। बेचारे नरेंद्र मोदी चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि पैरों में रस्सियाँ बंधी हुई थी, न्यायपालिका ने हाथों को बांध रखा था, पुरस्कार प्रेमियों ने जबान पर बंधन लगा रखा था। अब बड़ी मुश्किल से नरेंद्र मोदी ने कुछ-कुछ बंधन ढीले किए हैं। अब राहुल गांधी का कहना है, कि यदि जनता ने नरेंद्र मोदी को अधिक बहुमत दे दिया, तो नरेंद्र मोदी इन बंधनों को तोड़ देंगे। नरेंद्र मोदी नेहरू के सरीखे स्वतंत्र हो जाएंगे, नरेंद्र मोदी हिंदुओं को समानता का अधिकार दे देंगे, दे सकते

हैं, नरेंद्र मोदी हिंदुत्व को धर्म भी घोषित कर दें। अब भारत के आम लोगों को यह सोचना है, कि भारत को हिंदू मुसलमान पर चलना है, भारत को जातिवाद के बंधनों में जकड़ कर रखना है, भारत में वर्ग-संघर्ष को प्रोत्साहित करना है अथवा समान नागरिक संहिता, जाति मुक्त समाज, वर्ग-समन्वय। आप क्या चाहते हैं यह चुनना आपके हाथ में है।

*क्रमशः –*

## *जीवन पथ*

*गतांक में नरेन्द्र जी के उपन्यास "जीवन पथ" में अपने पढ़ा कि 'मसूद खां' अपने बच्चों को अपने मुश्किल दिनों के सहारा 'प्रोफ़ेसर श्रीवास्तव' के बारे में जिक्र करते हैं। बेटे 'रियाज़' को उनके प्रति कृतज्ञता रखने की सख्ती से नसीहत देते हैं - अब आगे...*

.... वह पुनः अपने पिता द्वारा दी गयी सीख को नकारने का प्रयास करता है। खां भी उसे पुनः नसीहत करते हैं- तुमने तो कभी इस देश की मूल परम्पराओं को समझने का प्रयास ही नहीं किया रियाज। यहाँ गुरू, शिष्य को कभी-भी अन्तिम बार शिक्षित नहीं करता है बल्कि वह तो उसके मानस में अपनी शिक्षाओं को अनावृत्त रूप से प्रसारित कर देता है। जिनका उद्देश्य जीवन पर्यन्त शिष्य का मार्गदर्शन करना होता है। ... वह अन्तिम बार तुम्हे शिक्षा देगा! तुम्हारे इस आशय का क्या मैं यह अर्थ समझूँ कि आज एक गुरू अपने शिष्य का त्याग कर देगा! नहीं मैंने भारत में यह नहीं सीखा है या तुम्हे इस रहस्य से अवगत कराऊँ कि आज एक गुरू अपनी योग्यताओं के अंश को अपने शिष्यों के मानस में रोपकर समाज के बीच भेज देगा जो तुम लोगों के माध्यम से समाज को दिशा देगी?.....क्षण भर चुप होकर वह पुनः कहते हैं ... श्रीवास्तव इस भौतिकतावादी युग का पेशेवर शिक्षक मात्र नहीं है रियाज। वह केवल परम्पराओं को ढोंने वाला व्यक्ति भी नहीं है। व्यक्ति के लिए जीविका जुटाना तो जीवन की आवश्यकता है। श्रीवास्तव का व्यक्तित्व नीति, संस्कार और व्यवहार के समन्वय का वह बिन्दु है जो कभी असन्तुलित हो ही नहीं सकता है। मैंने खुद से कहा है कि वह तो भारतीय दर्शन का व्याख्याता है और तुम लोगों का सौभाग्य है कि भाग्यशालियों को ही ऐसे गुरू से मार्गदर्शन मिलता है..... इतना सुनकर भी रियाज अपने पिता की नसीहत को नजरअन्दाज करने का प्रयास करता है। जिसे भांपकर सिमी कहती है- आप बात को ज्यादा महसूस न कीजिए पापा, क्योंकि रियाज भैया को नहीं पता है कि आज आपका मन ठीक नहीं है।

यह तो मन ठीक होने का विषय रहा ही नहीं बेटी। इसने यदि केवल मेरे दोस्त को नजरअन्दाज करने का प्रयास किया होता तो कोई बात नहीं थी। लेकिन मैं हमेशा से इसकी इस हरकत पर नजर रखे हुए हूँ कि यह उस आदमी से बार-बार दूर जाने का प्रयास करता रहा है जिससे ज्यादा आदरणीय हमारे परिवार के लिए अन्य कोई नहीं हो सकता है।

जी...! वह खां की बात को आत्मिक स्वीकृति देकर चुप हो जाती है। खां पुनः बोलते हैं-विश्व भर के समाज में आधुनिक पीढ़ी संस्कारों के त्याग को अपना नैसर्गिक अधिकार मान रही है। मेरी यह बात नए लोगों की सोच पर शायद इतना असर नहीं डालेगी, लेकिन ऐसा ही रहा तो आने वाले समय में समाज का भविष्य ऐसे गम्भीर संकट में समा जाएगा फिर जिसका समाधान समाज के पास नहीं होगा।

सिमी एवं रियाज उनकी बातों को स्वीकृति देते हैं। लेकिन दोनों के लिए उनकी बातों का सार अलग-अलग होता है। रियाज अपने पिता से मिले मार्गदर्शन को औपचारिकतावश स्वीकृति देता है और सिमी अनुकरणीय मानस बनाकर उनकी शिक्षा को स्वीकार करती है। अन्त में वह प्रार्थनीय मुद्रा में खां से कहती है-आप गुस्सा न कीजिए पापा और हमे आशीर्वाद दीजिए कि आज अपने छात्र जीवन के अन्तिम दिन अपने गुरू से हम ऐसा सबक सीखकर आए जो न सिर्फ हमारे लिए बल्कि विश्वभर की मानवता के लिए पथ प्रदर्शक बन जाए।

कुदरत तुम्हारी दुआ कबूल करे बेटी.... खां उसे आशीर्वाद देते हुए अपनी बात आगे बढ़ाते हैं-आज अवसर मिले तो तुम अपने गुरू से धर्म के मूल स्वरूप के विषय में अवश्य पूछना कि इसने मानवता का विभाजन क्यों किया है? ..... और वे दोनों खां की बातों को मोन स्वीकृति देते हुए कॉलिज चले जाते हैं।

.....

प्रोफेसर श्रीवास्तव जैसे ही क्लास रूम में प्रवेश करते हैं तो सभी छात्र खड़े होकर उनका अभिवादन करते हैं। वह क्लास द्वारा किया गया अभिवादन स्वीकार करने के बाद दैनिक क्रिया की भाँति अपना शैक्षणिक कार्य आरम्भ करते हैं। कक्ष के बहुत ही शांत एवं खुशगवार माहौल में उनकी शालीन आवाज स्थापित होने लगती है-प्यारे विद्यार्थियों ! इस संस्था के अनुशासन में आप लोगों के सम्मुख मेरा यह अन्तिम शैक्षणिक सत्र है। यद्यपि इस आधुनिक युग में भी, जिसमें शिक्षक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा प्रसार जैसे पवित्र कार्य को भी ढीठ पेशे के रूप में स्वीकार कर रहे हैं और शिक्षार्थी इसे नीति तथा संस्कार, जीवन के दोनों बहुमुखी सिद्धान्तों को त्यागकर अपने व्यक्तित्व निर्माण से पहले केवल, व्यावसायिक दृष्टिकोण से स्वीकार कर रहे हैं। ऐसा होने पर भी भारतीय संस्कृति की मर्यादाएं हमे शिक्षक एवं शिक्षार्थी के अति पवित्र एवं अदभुत रिश्ते को जीवन पर्यन्त जीवित रखने की शिक्षा देती हैं। क्षणभर चुप रहकर वह पुनः बोलते हैं- मैं मर्यादाओं के इस जीवन्त एवं महान एहसास को प्रणाम करता हूँ एवं तुम लोगों को इन मर्यादाओं को जीवन पर्यन्त निभाने की शिक्षा देता हूँ।.....मेरे बच्चों ! तुम मेरे स्नेह एवं आशीर्वाद के भागी हो। जैसा कि विदित है कि आज आप लोगों के बैच का विदाई पर्व मनाया जाएगा। लेकिन आज तुम्हारे एक साथी ने इस क्लास रूम में आने से पहले मुझसे धर्म के मूल स्वरूप एवं वर्तमान युग में धर्म के स्थापित स्वरूप में अन्तर तथा समाज में इसके मूल स्वरूप की प्रासंगिकता के विषय में जानने का आग्रह किया था। उसने मुझसे पूछा कि कई बार धर्म, समाज में अलगाव का कारण क्यों बन जाता है? क्या नीति और धर्म का भी कोई परस्पर सम्बन्ध होता है?....वह क्षणभर के लिए

अपने सामने बैठे विद्यार्थी मण्डल की तरफ देखते हैं और आगे कहते हैं-मैं जानता हूँ कि यह विषय विधि द्वारा स्थापित व्यवस्था के अनुसार औपचारिक नहीं है। लेकिन क्या आप लोग इस अन्तिम शैक्षणिक सत्र में अपने मूल विषय के साथ इस अलग विषय पर विचार करने का मेरा प्रस्ताव स्वीकार करेगें?

जी....क्लास रूम में समवेत स्वर गूंजता है।

प्रोफेसर पुनः संवाद आरम्भ करते हैं - मेरे होनहार युवा विद्यार्थियों! मैं एक समाज-विज्ञानी हूँ और मेरी अभिलाषा संसार को एक ऐसे संगठित एवं सुडौल परिवार के रूप में निर्मित होते देखने की है जिसमें जीवन की मौलिक स्वतन्त्रता सुनिश्चित रहे। लोगों के मन में कभी शान्ति के प्रति विश्वास की कमी न आए अर्थात् यह संसार धर्म-प्रज्ञ बनकर जिए। यद्यपि धर्म के विषय में मेरा चिन्तन वर्तमान समाज में स्थापित मान्यताओं के विपरीत है जो कि आरम्भ में आप लोगों को कुछ जटिल एवं अस्वीकार करने योग्य भी लग सकता है। क्योंकि मैं धर्म को जिस प्रकार परिभाषित करता हूँ या मैंने मानव सभ्यता के इतिहास का विश्लेषण करके इस विषय में जो शिक्षा प्रसाद पाया है वह दर्शन पर आधारित है। मैं भारतीय संस्कृति के विश्लेषण स्वरूप यह तथ्य स्वीकार करता हूँ कि दर्शन की विधा सृष्टि में उपलब्ध तमाम विषय-वस्तुओं के गुणधर्म को जानने का स्रोत है। दर्शन के ऐसे उत्कृष्टतम स्वभाव को समझते हुए भारतीय मनीषा ने इसका सूत्र स्पष्ट करते हुए कहा है कि पदार्थ के गुण-धर्म का प्रत्यक्षीकरण दर्शन कहलाता है। पदार्थ का वह स्वरूप जड़ भी है, चैतन्य भी। उसमें गुण भी निहित है और दोष भी। मैं भारतीय मनीषा की इस शिक्षा को उत्कन्ठ स्वीकार करता हूँ कि भारत मूलतः साम्प्रदायिक-धर्म का नहीं, दर्शन का देश है। यहाँ धर्म के स्वरूप को दर्शन की कसौटी पर रखा जाता है। मैं भारतीय मनीषा के इस दर्शन को अपने स्वाभिमान के रूप में स्वीकार करता हूँ। मेरे विचार में दर्शन, धर्म को परिष्कृत करता है क्योंकि यह दर्शन के गुण का ही प्रतिफल है कि समाज, धर्म के लक्षणों से परिचित हो पाता है। अस्तु, मैं दर्शन के सामने धर्म के महत्व को कम सिद्ध नहीं करना चाहता हूँ। क्योंकि यहाँ पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि दर्शन का धर्म क्या है या दर्शन क्या धारण करता है तो धर्म के भारतीय दर्शन के अनुसार, जोकि धारण करने योग्य यथार्थ को ही धर्म के रूप में स्वीकार करता है, को धर्म ही सर्वप्रथम (सर्वाच्च नहीं) लगेगा। लेकिन तब प्रश्न होगा कि धर्म के विषय में मनुष्य को यह बोध कैसे हुआ?.....प्रोफेसर क्षणिक रूककर पुनः बोलते हैं-खैर हमे प्रस्तुत विषय में इस दिशा में बहस नहीं करनी है बल्कि यह विचार करना है कि वर्तमान युग में धर्म के मूल स्वरूप की प्रासंगिता क्या है? समाज में धर्म कई बार अलगाव का कारण क्यों बनता है? इस विषय में मेरा विचार यह है कि समाज में धर्म

को उसकी प्रकृति के विरूद्ध, रूढियों के जाल में फंसाकर, समाज के धार्मिक एवं राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं ने मनुष्यों की प्राकृतिक सहिष्णुता की धारणा को मृत प्राय कर दिया है। मूलतः मानव जाति के सर्वेसर्वाओं ने अपनी सत्ता की स्थापना के लिए मानवता की परिभाषा को बदल दिया है। आधुनिक युग में व्यक्ति, धर्म के मूल स्वरूप से मार्गदर्शन पाने के विषय में तो निष्क्रिय हो गया है लेकिन इसके नाम पर अपने सामाजिक एवं राजनीतिक वर्ग आधारित संगठनों को बहुत मजबूत कर रहा है। मूलतः मैं धर्म को पूजा-पद्धति, मत-अनुष्ठान तथा उसके अन्य निश्चित पहचान सिद्ध करने वाले संगठन के रूप में स्वीकार नहीं करता हूँ बल्कि इसे भारत की सनातन विचारधारा के आधार पर, मनुष्य के मार्ग-दर्शक के रूप में स्वीकार करता हूँ। ठीक वैसे ही जैसे दर्शन, धर्म के यथार्थ को स्पष्ट करता है कि किस परिस्थिति में उसका स्वरूप क्या होना चाहिए? ठीक इसी प्रकार धर्म, व्यक्ति और समाज का, जड़ एवं चैतन्य का मार्गदर्शन करता है कि किस परिस्थिति में किस धारण करने योग्य वस्तुस्थिति को धर्म कहते हैं! लेकिन मैं दर्शन के मूल सूत्र की अवहेलना करके धर्म के स्वभाव को अपने अग्रजों से सुन तो सकता हूँ पर उसे समझ नहीं सकता।... प्रोफेसर अपने स्वभाव के अनुसार क्षणिक चुप होकर पुनः बोलते हैं- मैं दर्शन और धर्म के अन्तरसम्बन्धों की चर्चा केवल तथ्यों की पुष्टि के लिए कर रहा हूँ। तथापि आज के विषय को स्पष्ट करने के लिए मैं धर्म के सार को इस उदाहरण से स्पष्ट करना चाहुँगा कि कोई वैज्ञानिक जब ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए किसी राकेट का आविष्कार करता है तो मानवता के परिप्रेक्ष्य में उसका उद्देश्य धर्मयुक्त कहलाता है, लेकिन जब वह उसी तकनीक का प्रयोग मानवता का विध्वंस करने वाले प्रक्षेपास्त्र के बनाने में करता है तो उसका उद्देश्य धर्महीन हो जाता है।

यद्यपि विश्व में स्थापित राष्ट्र (राज्य) की व्यवस्था मेरे कथन को सम्भवतः उपयुक्त न समझे लेकिन सत्य की परिभाषा स्वार्थ के अनुसार निर्धारित नहीं की जा सकती है। ब्रह्माण्ड में सत्य की स्थापना का यह नैसर्गिक नियम है कि वह जो होता है वही कहा और स्वीकार किया जाता है, यह सत्य का दर्शन है। कोई और किसी भी प्रकार का मिश्रण सत्य को अत्यधिक तार्किक तो बना सकता है लेकिन तब उसके प्राकृतिक स्वभाव पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। यदि सत्य के स्वरूप से बिना छेड़-छाड़ किए उसका पालन किया जाता है तो जीवन का सन्तुलन कभी अस्थिर नहीं होता है। यह धर्म का दर्शन है। क्योंकि यही तथ्य तो धारण करने योग्य है। भारत की मनीषा धर्म के ऐसे ही स्वरूप को व्याख्यायित करती है। जिसके तत्वावधान में शिक्षा पाकर मैं यह तथ्य आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ कि धर्म, मानवता का पथ प्रदर्शक है, मनुष्य के देवत्व का प्रमाण है, पर ईश्वर की सृष्टि में इसका कोई बहुवचन नहीं है।

विषय की गूढ़ता को समझने के लिए मैं इस दिशा में अपने विचारों को यहीं रोकते हुए, समाज में प्रचलित विभिन्न तथाकथित धर्मों (मूलतः सम्प्रदायवाद) पर आप लोगों से चर्चा करना चाहता हूँ। संसार में इन तथाकथित धर्मों की विचार- धाराओं द्वारा कई बार पनपी हृदय विदारक परिस्थिति ने मेरे अन्तरमन को झकझोरा है कि प्रकृति द्वारा नियुक्त उसका पर्यवेक्षक, सभ्यता के स्वभाव को कर्म से परिभाषित करने वाला जीव श्रेष्ठ 'मनुष्य' धर्म के मूल स्वभाव को कब अपने आचरण में स्वीकार करेगा? क्योंकि इस विषय में साक्ष्य उपलब्ध हैं कि दुनिया के इतिहास में धर्म के नाम पर जातीय और वर्ग श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयासों से उत्पन्न हुए संघर्षों के कारण सबसे ज्यादा मनुष्य असमय काल के गाल में समाए हैं। राजनीतिक सत्ता की स्थापना के संघर्ष भी धर्म जनित संघर्षों से कदाचित ही अलग रहे हैं।.....मेरे होनहार विद्यार्थियों! एक ओर तो दुनिया भर के लोग व्यवस्था के स्थापित सभी रूपों से किसी न किसी प्रकार असन्तुष्ट हैं लेकिन प्रतिस्पर्धात्मक सन्तुष्टि के लिए सभी लोग अपने-अपने पक्ष को सार्वभौमिक मान लेते हैं। मैं आप लोगों से जानना चाहता हूँ कि क्या धर्म का दर्शन पक्षपरता के सिद्धान्त को विकसित करता है? मैं समझता हूँ कि यह मानवता की भूख है, दुनिया में जिसे मिटाने के अपर्याप्त प्रयास ही हुए हैं। मैं आपसे पुनः प्रश्न करता हूँ कि क्या मानव समाज किसी ऐसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं कर सकता है जो खुद उसके परिवेश से तथाकथित धार्मिक वैमनस्य अर्थात हीन एवं रूढ़ कट्टरवाद का पतन कर दे!.....प्रोफेसर श्रीवास्तव विषय पर चर्चा को आगे बढाते हुए अग्रिम पंक्ति में बैठी एक छात्रा नीरू से पूछते हैं कि उसकी नजरों में इस आधुनिक युग में मनुष्य के धर्म का क्या आचरण होना चाहिए? जबकि हम सभी यह जानते हैं कि समाज ने अपनी इस रूढ व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पूर्ण मानवता को बेतहाशा हानियाँ पहुँचाई हैं!

स्वभाव से बेहद चंचल नीरू, प्रोफेसर की प्रश्नसूचक टिप्पणी पर केवल इतनी प्रतिक्रिया करती है-''सर! मेरे लिए यह बहुत जटिल विषय है। मैं इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहती हूँ!''.....नीरू के नकारात्मक उत्तर को सुनकर प्रोफेसर इस बार एक छात्र आदित्य से पूर्ववत प्रश्न करते हैं! आदित्य विषय पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कहता है-मेरे विचार से हम अपनी मौजूदा सामाजिक संरचना को नहीं बदल सकते हैं सर और न मुझे ऐसा करने की कोई आवश्यकता महसूस होती है। क्योंकि हम एक धर्मनिरपेक्ष समाज हैं, क्या हम अपने समाज के सामने परस्पर सहिष्णुता की स्थापना के विषय में धर्मनिरपेक्षता से अन्य दूसरा कोई श्रेष्ठ एवं मान्य दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकते हैं? मैं मानता हूँ कि हमारे संविधान निर्माताओं ने समाज के अग्रजों से प्रेरणा पाकर धर्मनिरपेक्षता के रूप में व्यवस्था के अन्तर्गत सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए पर्याप्त दृष्टिकोण उपलब्ध कराया है। वस्तुतः हमे इस क्षेत्र में

अपनी उर्जा नष्ट करने की कोई आवश्यकता नही है। .....वह अपना विचार प्रस्तुत करके, प्रोफेसर से आज्ञा लेकर बैठ जाता है। .....जिसे सुनकर प्रोफेसर कुछ सोचते हुए कहते हैं-इस देश की मनीषा, धर्म के विषय में यह दृष्टांत प्रस्तुत करती है कि धर्म का व्यक्ति के सामाजिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में देशकाल परिस्थिति के अनुसार सामाजिक व्यवस्था से सम्बन्ध होता है लेकिन उसका राज्यगत व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। मैं आप लोगों से इस विषय पर चर्चा नहीं करना चाहता हूँ कि धर्म के तत्वावधान में संविधान की स्थापना की गयी है या संविधान के अन्तर्गत धर्म का कोई आधुनिक सार्वभौमिक सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है। क्योंकि तथ्य को स्पष्ट करने के लिए मैं यह बात पुनः कहता हूँ कि यदि राज्य ने धर्म के विषय में कोई भी सिद्धान्त प्रस्तुत किया है तो यह तो उसके द्वारा समाज के अधिकारों का अतिक्रमण है। संविधान को न धर्म (सम्प्रदायवाद) से प्रेरणा पानी चाहिए और न उसका मार्गदर्शन करना चाहिए। यह व्यक्ति का व्यक्तिगत विषय है और इससे सम्बन्धित विषय-वस्तु को केवल समाज से मार्गदर्शन पाना चाहिए। धर्म का कार्य व्यक्ति को नीति-बोध कराना मात्र है जो कि उससे उसके दर्शन की अपेक्षा है। आप सभी समझिए कि मेरा आशय धर्म के गुण प्रधान स्वरूप को व्याख्यायित करने से है। ऐसे में मैं यदि आप लोगों से पुछूँ कि संविधान का धर्म क्या होता है, क्या आप में से कोई मेरे इस प्रश्न का उत्तर देगा?

जी हाँ सर!...एक अन्य छात्र प्रोफेसर से आग्रह करता है।

कहो विवेक !.....वह स्वीकृति देते हैं।

सर यथास्थिति विषय के परिप्रेक्ष्य के अनुसार संविधान का धर्म समाज के परिवेश में व्यवस्था की स्थापना करना है।

"लेकिन समाज ने संविधान के अन्तर्गत राज्य के माध्यम से व्यवस्था तो स्थापित की है विवेक! इसे कैसे नकारोगे?" प्रोफेसर उससे पुनः प्रश्न करते हैं।

''शराफत छोड़ो, समझदार बनो''

''सुनो सबकी, करो मन की''

''समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता''
''समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार''

''चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे''
''हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए''